6`

भाग 1 (14:1–15:13):

''एक दूसरे पर दोष न लगाएं''

(14:5–13क)

''जब मसीही लोग असहमत होते हैं'' पाठ में हमने रोमियों 14 के पहले भाग का अध्ययन आरम्भ किया। शेष भाग इस ताड़ना से आरम्भ होता है: ''सो आगे हम एक-दूसरे पर दोष न लगाएं'' (आयत 13क)। ''सो'' संकेत देता है कि जो कुछ पौलुस ने 1 से 12 आयतों में कहा *उसके आधार पर,* इस निष्कर्ष पर पहुंचा जाना चाहिए कि मसीही होने के कारण हमें अब एक दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए।

पौलुस को रोमियों 14 में दोष लगाने के बारे में काफ़ी कुछ कहना था। ''दोष'' के लिए यूनानी शब्द *krino* के रूप इस अध्याय में नौ बार मिलते हैं। जैसा कि पहले देखा गया है कि *krino* का इस्तेमाल सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ढंगों से किया जा सकता है। वैसे ही जैसे आज ''न्याय'' क्रिया का इस्तेमाल किया जाता है। अध्याय 14 में *krino* का अभिप्राय मुख्यतया नकारात्मक है और सामान्यतया इसका अनुवाद ''दोष'' किया गया है (आयतें 3, 4, 10, 13क)। अध्याय के अन्त में इसका अनुवाद ''दण्ड'' और ''दोषी'' के रूप में हुआ है (आयतें 22, 23)।[1]

कई लोग दोषी न ठहराने की पौलुस की ताड़ना का अर्थ यह लेते हैं कि हमें दूसरों की शिक्षा को कभी चुनौती नहीं देनी चाहिए, यानी हमें किसी भी दृष्टिकोण को सह लेना चाहिए। वही पौलुस जिसने 15:7 में ''एक-दूसरे को *'ग्रहण'* '' करने को कहा, ने 16:17 में ''जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट डालने का कारण होते हैं ... *उनसे दूर*'' रहने को कहा। पौलुस ने कुछ भाइयों को ''ग्रहण'' करने को और अन्यों ''से दूर रहने'' को कहा। यह अन्तर क्यों है? हमें हम से अलग विचार रखने वालों को तो *ग्रहण* करना चाहिए, परन्तु फूट डालने वाली गलत शिक्षा को *ठुकराना* चाहिए। हम कसी हुई रस्सी पर चल रहे हैं और कोशिश करते हैं कि दाईं ओर न गिर जाएं, जहां हम अपने से अलग विचार रखने वालों का न्याय करें; और साथ ही हम बाईं ओर न गिरने की कोशिश करते हैं, जहां हम गलती को ग्रहण करके उसे सह सकें।

मैं इस बात पर फिर ज़ोर देता हूं कि रोमियों 14:1–15:13 *विचार* के मामलों पर ध्यान देता है। *इन* मामलों के विषय में,[2] पौलुस ने कहा, ''सो आगे को एक दूसरे पर दोष न लगाएं।'' हमारे इस वचन पाठ में उसने कम से कम चार कारण दिए कि हमें अब एक-दूसरे पर दोष क्यों नहीं लगाना चाहिए।

क्योंकि हम सब परमेश्वर की महिमा करते हैं (14:5, 6)

असहमति की बात (आयत 5क)

2, 3 आयतों में पौलुस ने मांस खाने या मांस न खाने के मुद्दे का परिचय दिया। आयत 5 में

उसने अलग विचार रखने का एक दूसरा उदाहरण दिया। विचार का आरम्भ होता है, ''कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानता है, और कोई सब दिन एक सा जानता है'' (आयत 5क)। आम तौर पर माना जाता है कि जो लोग ''एक दिन को दूसरे से बढ़कर'' जानते थे, वे यहूदी मसीही थे, जिनका पालन-पोषण सब्त का दिन और अन्य पवित्र दिनों को मनाने से हुआ था। परन्तु अन्यजातियों के भी विशेष दिन थे। व्याख्या और प्रासंगिकता में सहायता के लिए मैं यहूदी मसीही और सब्त के उदाहरण का इस्तेमाल करूंगा, परन्तु याद रखें कि हम पक्का नहीं कह सकते कि पौलुस के मन में (यहूदी या अन्यजाति) में से कौन था।

मान लें कि आप एक यहूदी हैं, जो जीवन भर सब्त को मानता आया हो। आप विवेकपूर्ण ढंग से सातवें दिन यहूदी व्यवस्था तथा परम्परा की मर्यादाओं का पालन करते आए हैं। फिर आप मसीही बन जाते हैं। चाहे आप अपने पूरे मन से प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन अपने साथी मसीहियों के साथ आराधना तो करते हैं, परन्तु आपके लिए सब्त को भुला पाना कठिन होगा, जिसे आप दशकों से मानते आए हैं? सातवें दिन उठने पर आपको कैसा लगेगा? क्या आपको यह ''किसी दूसरे दिन'' जैसा ही लगेगा? यह बताना आसान है कि यहूदी मसीही व्यक्ति ''एक दिन को दूसरे से बढ़कर'' जान सकता है।

अन्य ''सब दिन एक सा'' जानते थे। वे समझते थे कि पुरानी वाचा की रीतियां और संस्कारों को मिटा दिया गया है, यानी ''क्रूस पर कीलों से जड़'' दिया गया है (इफिसियों 2:15; कुलुस्सियों 2:14)। सब्त का दिन न मानने के लिए (कुलुस्सियों 2:16) किसी को भी दोषी (दण्डित) नहीं ठहराया जाना था।

रोमियों 14 में पौलुस ने इस विशेष मुद्दे को ''निर्बल'' और दूसरे को ''बलवान'' नहीं कहा, परन्तु गलातियों 4:9-11 में उसने कुछ दिनों को मनाने के लिए कइयों को डांट लगाई। इसलिए हमें लग सकता है कि इस प्रश्न पर दिनों को मनाने वाला ''निर्बल'' भाई था जबकि इन्हें न मानने वाला ''बजवान'' भाई।

कइयों को आश्चर्य होता है कि पौलुस ने दिनों को मानने के लिए गलातिया के मसीही लोगों के विरुद्ध इतनी कठोर भाषा का इस्तेमाल क्यों किया जबकि रोम के मसीही लोगों से उसने दिनों को मानने वालों को ग्रहण करने को कहा। गलातिया में यह सिखाया जा रहा था कि उद्धार के लिए मूसा की व्यवस्था का पालन करना (जिसमें यहूदियों के पवित्र दिन भी थे) आवश्यक है। शायद इस दिन को रोम में कुछ लोग व्यक्तिगत विश्वास की बात मानते थे, जिसमें दूसरों पर मानने के लिए कोई ज़बर्दस्ती नहीं की जाती थी।

इस मामले पर ''बलवान'' भाई की स्थिति पर एक या दो शब्द कहे जाने चाहिए। NASB में कहा गया है, उसने हर दिन को एक समान ''माना।'' इस शब्दावली से यह प्रभाव जा सकता है कि वह हर दिन को *साधारण* मानता था, यानी वह *किसी* दिन को विशेष नहीं मानता था। शायद इससे हमारी समझ में सहायता मिल जाए, यदि हम ''समान'' शब्द को पीछे कर दें, जिसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था। यह हमें ''हर दिन का सम्मान'' के साथ छोड़ देता है। ''बढ़कर'' का अनुवाद *krino* से किया गया है, जिसका यहां अर्थ ''स्वीकृति, सम्मान देना'' है।[3] रोमियों 14:5 में इसका अर्थ है कि ''*हर* दिन ... पवित्र माना जाता है।''[4]

कोई कह सकता है, ''पर मैंने सोचा था कि सप्ताह का पहला दिन मसीही व्यक्ति के लिए

पवित्र दिन है।'' यह सच है कि परमेश्वर ने सप्ताह के पहले दिन को आराधना के विशेष दिन के रूप में अलग किया है;[5] यही वह दिन है, जब प्रभु भोज में भाग लेने के रूप में हम ''रोटी तोड़ने'' के लिए इकट्ठे होते हैं (प्रेरितों 20:7)।[6] तौभी हमें सप्ताह के पहले दिन को ही सप्ताह के एक मात्र पवित्र दिन के रूप में नहीं मानना चाहिए। हर दिन प्रभु के लिए पवित्र किया जाना (अलग रखा जाना) चाहिए। यदि हमारे लिए सोमवार से शनिवार तक के दिन ''पवित्र दिन'' नहीं हैं तो रविवार का दिन भी नहीं होगा।

व्यक्तिगत विश्वास (आयत 5ख)

यह हमें विचार के मामलों पर महत्वपूर्ण कथन पर ले आता है: ''हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले'' (आयत 5ख)। ''निश्चय कर ले'' शब्द एक मिश्रित शब्द *plerophoreo* से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''पूरे माप में'' (*pleros* [''पूर्ण''] के साथ *phero* [''ले जाना''])।[7] रोमियों 4:21 में इस शब्द का अनुवाद ''निश्चय जाना'' किया गया है। 14:5 में KJV में यह ''पूरी तरह से माना'' है। NIrV में कहा गया है, ''हर व्यक्ति को अपने मन में पूरी तरह से निश्चित होना चाहिए।''

कई लोग यह मान लेते हैं कि यदि यह आम तौर पर मान लिया जाए कि कोई मुद्दा विचार के दायरे में है तो उन्हें इस पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। पौलुस ने संकेत दिया कि ऐसा नहीं है। किसी भी मुद्दे के विषय में हमें विचार करने, अध्ययन करने, प्रार्थना करने और अपने मन बनाने की आवश्यकता होती है। हमें उस मामले में *हमारे* लिए परमेश्वर की इच्छा के विषय में ''पूरी तरह से विश्वास'' होना आवश्यक है। यदि यह विचार के दायरे में आता है तो हम दूसरों पर अपने निर्णय थोपते नहीं हैं; परन्तु व्यक्तिगत विश्वास प्रभु की महिमा के लिए समर्पित जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

पहले एक पाठ में हमने एक मुद्दा उठाया था कि मसीही लोगों को सिपाही या सैनिक के रूप में सेवा करनी चाहिए या नहीं। कई क्षेत्रों में इसे विचार के दायरे में रखा जाता है,[8] परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यह मुद्दा महत्वहीन है या इस मामले पर आपके विश्वास से कोई फर्क नहीं पड़ता। जहां भी आप रहते हैं, वहां पाए जाने वाले विचार को बिना संदेह के स्वीकार न करें। इसके बजाय नये नियम की उन सभी आयतों का अध्ययन करें, जो आपको लगती हैं कि विचार योग्य हैं। जब तक आपको अपने मन में ''पूरी तरह से विश्वास'' न हो जाए, तब तक अध्ययन और प्रार्थना करते रहें।

परमेश्वर का उद्देश्य (आयत 6)

इसके साथ ही इस मुद्दे या विचार के अन्य मामलों पर आपसे जान-बूझकर असहमत होने वालों का न्याय न करें या उन्हें दोषी न ठहराएं, क्यों। आयत 6 हमें हमारे वचन पाठ का पहला कारण देती है कि हमें किसी भाई को दोषी नहीं ठहराना है: *क्योंकि हम दोनों प्रभु की महिमा करने के प्रयास में हैं।* पौलुस ने कहा, ''जो किसी दिन को मानता है, वह प्रभु के लिए मानता है'' (आयत 6क)। अन्य शब्दों में वह अपने लाभ के लिए नहीं, बल्कि प्रभु के लाभ के लिए ऐसा कर रहा है JB के अनुवाद में कहा गया है कि ''वह ऐसा प्रभु के सम्मान में करता है।'' यह इस बात

को *मान लेता* है कि उसके मन में यह ईश्वरीय उद्देश्य है। हो सकता है कि हमेशा ऐसा न हो, परन्तु प्रेम हमेशा बेहतरीन मानने की कोशिश करता है।[9]

यूनानी धर्मशास्त्र में दिन को न मानने वाले का उल्लेख नहीं है; इसके बजाय पौलुस मांस खाने या मांस न खाने के अपने मुख्य उदाहरण में वापस चला जाता है। परन्तु हम संदर्भ से बातें एकत्रित कर सकते हैं कि जो दिन को नहीं मानता, उसमें भी जो कुछ वह करता है उसे ''प्रभु के लिए'' करना चुना है।[10]

आयत 6 के पिछले भाग में पौलुस अध्याय के आरम्भ में दिए उदाहरण में वापस आ गया। उसने इस उदाहरण का इस्तेमाल अपनी शेष चर्चा के लिए जारी रखा (देखें आयतें 15, 17, 20, 21, 23): ''जो [मांस] खाता है, वह प्रभु [उसे आदर देने के लिए] के लिए खाता है, क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है, और जो [मांस] नहीं खाता,[11] वह प्रभु के लिए नहीं खाता और परमेश्वर का धन्यवाद करता है'' (आयत 6ख)। अन्य शब्दों में एक भाई ने रात्रि भोज के लिए भुना हुआ गोश्त और आलू रखे हैं, जबकि दूसरे के पास भुट्टे और दालें हैं;[12] परन्तु दोनों ही अपने भोजन के लिए प्रभु को धन्यवाद देते हैं। दोनों परमेश्वर को महिमा देते हैं और दोनों परमेश्वर का आदर करने का प्रयास करते हैं। तो फिर उनमें से कोई भी दूसरे पर दोष क्यों लगाए?

आयत 6 में मुख्य शब्द ''प्रभु'' है। इस आयत में यह शब्द तीन बार मिलता है। हमारा ध्यान प्रभु पर होना आवश्यक है। उसकी महिमा करना, उसका आदर करना और उसे भाना, इन विचारों से कहीं महत्वपूर्ण है कि हम क्या खा सकते हैं या क्या नहीं खा सकते।

क्योंकि हम सब प्रभु के हैं (14:7-9)

सब मसीही प्रभु के हैं (आयतें 7-9)

दूसरे मसीही लोगों पर दोष न लगाने का दूसरा कारण 7 से 9 आयतों में मिलता है। हमें एक-दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए *क्योंकि हम सब प्रभु के ही हैं*।

आयत 7 कइयों को जानी पहचानी लगती है: ''क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिए जीता है, और न कोई अपने लिए मरता है।'' KJV में ''क्योंकि हम में से अपने लिए कोई नहीं जीता और न कोई अपने लिए मरता है'' है। KJV के शब्दों में आमतौर पर यह सिखाने के लिए कि हम अपने आपको शेष मनुष्यजाति से अलग नहीं कर सकते, यानी भलाई हो या बुराई हम सब एक-दूसरे पर उससे प्रभाव डालते हैं।[13] यह सच्ची बात है, परन्तु सम्भवतया यह मुख्य विचार है जो पौलुस बताना चाहता था। ''उसका विचार तो यह है कि न तो जीवन में और न मृत्यु में हम इस भाग से भाग सकते हैं कि हम चाहे जो भी करें या जो भी हों वह सब परमेश्वर के सामने है।''[14]

आयत 7 को फिर से देखें और ध्यान दें कि यह आयत 8 से कैसे जुड़ी है:[15] ''क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिए जीता है[16] और न कोई अपने लिए मरता है। क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिए जीवित हैं और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं; सो हम जीएं या मरें, हम प्रभु ही के हैं'' (आयतें 7, 8)। AB में आयत 7 को इस प्रकार विस्तार दिया गया है: ''हम में से कोई भी अपने लिए नहीं जीता [बल्कि प्रभु के लिए], और न हम में से कोई अपने लिए मरता है [बल्कि प्रभु के लिए] ...।'' ''हम'' का अर्थ ''हम मसीही लोग'' है। आयत 7 और 8 दोनों

में पौलुस के कहने का अर्थ था कि मसीही व्यक्ति अब अपना नहीं रहा, बल्कि वह ''प्रभु का'' है।

जीवन और *मरन* की पौलुस की बात सम्भवतया उस दायरे को समेटने के लिए थी, जिसमें व्यक्ति रहता है। जे. बी. फिलिप्स ने आयत 8 को इस प्रकार लिखा है: ''हर मोड़ पर जीवन हमें परमेश्वर से जोड़ता है और जब हम मर जाते हैं तो हम उसे आमने-सामने देखते हैं। जीयें या मरें हम परमेश्वर के हाथों में हैं।''

आयत 9 में पौलुस ने जीवन और मृत्यु का अपना रूपक जारी रखा: ''क्योंकि मसीह इसी लिए मरा और जी भी उठा कि वह मरे हुओं और जीवतों, दोनों का प्रभु हो।'' MSG में ''मसीह इसीलिए जिया और मरा और फिर दोबारा जिया ताकि जीवन और मृत्यु के पूरे दायरे के बाहर वह हमारा प्रभु हो सके।...''

इसलिए हमें दोष नहीं लगाना चाहिए

क्या आपने प्रभु पर निरन्तर ध्यान दिया? 7 से 9 आयतों में ''प्रभु'' शब्द चार बार आता है। इन आयतों से कई प्रासंगिकताएं बनाई जा सकती हैं। क्योंकि हम प्रभु के हैं, इसलिए हमें अपने आपको प्रसन्न करने के लिए नहीं, बल्कि उसे प्रसन्न करने के लिए जीना चाहिए; हम चाहे जीएं या मरें, जैसे भी हो, हमारे विचार उस पर केन्द्रित होने चाहिए (देखें फिलिप्पियों 1:21-23)। परन्तु पौलुस का फोकस अभी भी इसी पर था कि हमें एक-दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए। JB ने अगली बात को समझाने के लिए 7, 8, 9 आयतों को जोड़ दिया: ''*यह* [जो अभी-अभी कहा गया] इसलिए भी है कि तुम्हें किसी भाई पर दोष कभी नहीं लगाना चाहिए'' (आयत 10क)।

यह तथ्य कि मसीही लोग प्रभु के हों, इस प्रकार के प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करने वाला होना चाहिए: ''क्योंकि प्रभु ने किसी भाई को अपना मान लिया है, तो हम उस पर दोष क्यों लगा रहे हैं?''; ''हम भी उसे स्वीकार क्यों नहीं कर लेते?'' आयत 4 में हमें याद दिलाया गया है, जहां पौलुस ने पूछा, ''तू कौन है, जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है।...'' परन्तु यहां पर तस्वीर थोड़ी सी बदली गई है। यहां व्यक्ति अब किसी दूसरे के सेवक की आलोचना नहीं कर रहा है, बल्कि हम एक सेवक को स्वामी के घर एक साथी सेवक पर दोष लगाते देखते हैं। कितनी हिम्मत की बात है!

क्योंकि हम भाई हैं (14:10क)

हम परिवार हैं

अगली तीन आयतें (10 से 12) एक ही प्रबल विचार के साथ एक इकाई हैं यानी आयत 10 का पहला भाग उस विचार में ले जाता है, परन्तु पौलुस ने ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया, जो इतना महत्वपूर्ण है कि मैं चाहता हूं कि हम इसे अलग करने पर विचार करें और वह शब्द ''भाई'' है। हमें अब से एक-दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए, *क्योंकि हम मसीह में भाई और बहनें हैं*।[17]

पौलुस ने पूछा, ''तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ

जानता है ?'' (आयत 10क)। पहला प्रश्न ''निर्बल'' भाई के लिए हो सकता है (देखें आयतें 2, 3): ''परन्तु तू अपने भाई पर दोष क्यों लगता है ?'' दूसरा प्रश्न ''बलवान'' भाई से पूछा गया होगा (देखें आयत 3): ''या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है ?'' दोनों प्रश्न आयत 4 में पूछे गए प्रश्न की भावना की झलक देते हैं: ''*तू* कौन है ? जो [अपने भाई पर] दोष लगाता है ?'' परन्तु आयत 10 में पूछे गए प्रश्न में एक महत्वपूर्ण शब्द ''भाई'' जोड़ा गया है। (जैसा कि पूरे पत्र में, ''भाई'' का इस्तेमाल मसीह में भाइयों और बहनों को दर्शाने के लिए सामान्य अर्थ में किया गया है।) पौलुस ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि हम परिवार हैं!

हमें एक-दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए

क्योंकि हम परिवार हैं, इसलिए हमें एक-दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए। हम में से अधिकतर लोग परिवार के मामले में एक-दूसरे को सहने को तैयार होते हैं। पिछली बार परिवार के इकट्ठा होने के बारे में विचार करें, जिसमें आप शामिल हुए थे।[18] शायद बालों में कंघी किए बिना और चिड़ाने वाली आदतों के साथ अंकल होमेर नहीं थे। शायद अंटी मेबल वहीं थी। यह अंटी मेबल वही है, जो हमेशा सोच समझकर बोलती है चाहे इससे लोग नाराज़ ही हो जाएं। शायद बिगड़ैल चचेरे भाई भी वहीं थे, जो इस उम्मीद से कि वे अपने जीवन बदल लेंगे, हर रात के लिए प्रार्थना करते हैं। बेशक एक-दूसरे के पीछे भागने वाले कुछ बदमाश भतीजों के बिना ऐसा इकट्ठ अधूरा है, जिन्होंने आपकी दादी को गिरा ही दिया था। अधिकतर परिवारों के इकट्ठा होने में कम से कम कोई न कोई अलग सदस्य अवश्य होता है। तौ भी, जब खाने का समय आता है तो उन्हें भी शेष लोगों के साथ बैठकर खाने का आनन्द लेने के लिए बुलाया जाता है।

यदि हम अपने सांसारिक परिवारों में ऐसी भिन्नताओं को स्वीकार करने को तैयार हैं, तो हमें अपने आत्मिक परिवार में उन लोगों को स्वीकार करने में कितना अधिक तैयार होना चाहिए! चार्ल्स स्विंडल ने सुझाव दिया कि रोमियों 14 की समस्या *भोजन* की समस्या नहीं थी, यह तो *प्रेम* की समस्या थी।[19] ''और सबमें श्रेष्ठ बात यह है कि एक-दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है'' (1 पतरस 4:8)।

क्योंकि हम सब का न्याय होगा (14:10ख-13क)

सबका न्याय होगा (आयतें 10ख, 11)

यह हमें चौथे कारण पर ले आता है कि हमें एक दूसरे पर दोष क्यों नहीं लगाना चाहिए। यह कारण है कि *क्योंकि हम सब का न्याय प्रभु करेगा।* इस तथ्य का संकेत कि हमारा न्याय परमेश्वर द्वारा किया जाएगा, आयत 4 में मिला था। यहां इसे स्पष्ट बताया गया है: ''हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने[20] खड़े होंगे[21]'' (आयत 10ख)।

''न्याय सिंहासन'' का अनुवाद *bema* से किया गया है, जिसका अर्थ खुली हवा, ऊंचा मंच, जिसके सामने दोषी लोग खड़े हों।[22] कैदियों को *bema* के सामने खड़ा किया जाता था जो पौलुस के समय में एक आम बात होगी। मैं जब पुराने कुरिन्थुस में गया तो मैंने एक *bema* देखा जिसे पुन: निर्मित किया गया था। इसके सामने बीच में एक छोटे खम्भे वाला खुला क्षेत्र था, जहां

आरोपी खड़े होते थे।

जैसे पौलुस के समय में रोमी कचहरियों में लोग खड़े होते थे, वैसे ही आप और मैं अपना सनातन दण्ड पाने के लिए परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे। MSG में यह वाक्यांश है: ''अन्त में हम खत्म होने जा रहे हैं ... न्याय के स्थान के साथ-साथ, परमेश्वर के सामने।''

इस बात के प्रमाण के लिए कि ऐसा ही होगा पौलुस ने यशायाह 45:23 से उद्धृत किया: ''क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है,[23] मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर का अंगीकार करेगा'' (आयत 11)। यशायाह 45 वह वचन है, ''जिसमें परमेश्वर सृष्टि और छुटकारे में मूर्तियों के व्यर्थ नकारेपन के साथ अपनी वास्तविकता और सामर्थ में भिन्नता करता है।''[24] इस वचन में संकेत है कि एक समय आएगा जब हर कोई यहोवा को एक सच्चे परमेश्वर के रूप में मान लेगा। यह तब होगा जब न्याय के दिन हम उसके सामने खड़े होंगे।

हम में से हर किसी को परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने एक दिन पेश होना है, तो फिर हमारे लिए एक दूसरे का न्याय करना कितना गलत है! *Bema* के सामने न्याय की प्रतीक्षा करते हुए खड़े कैदियों की कतार की कल्पना करें। अचानक उनमें से एक उस समूह में से भागकर *bema* पर चढ़ जाता है। वह चिल्लाता है, ''अब मैं जज हूं!'' कितना मूर्ख व्यक्ति है! सिपाहियों द्वारा उसे नीचे उतारकर अपनी जगह खड़ा करने पर उसे समझ आ जाएगा कि दूसरों का न्याय करने का काम उसका नहीं है।

हर किसी को अपने काम का हिसाब देना होगा (आयतें 12, 13क)

पौलुस ने कहा, ''सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा'' (आयत 12)। मुझे आपका हिसाब नहीं देना पड़ेगा और न आपको मेरा हिसाब देना पड़ेगा। ''हम में से हर किसी को परमेश्वर को *अपना ही* लेखा देना होगा।''[25]

जी उठने के बाद यीशु तिबरियुस (गलील) के पास अपने चेलों को दिखाई दिया (यूहन्ना 21)। यीशु ने इस अवसर का इस्तेमाल पतरस से बात करने के लिए किया, जिसने उसका इनकार किया था। बातचीत के अन्त में पतरस ने यीशु से यूहन्ना के विषय में पूछा, जो पास ही खड़ा था: ''हे प्रभु, इसका क्या हाल होगा?'' (आयत 21)। यीशु ने उत्तर दिया, ''तुझे इससे क्या? *तू* मेरे पीछे हो ले!'' (आयत 22)। अन्य शब्दों में दूसरों की चिन्ता छोड़ और मेरे साथ *अपने* सम्बन्ध की चिन्ता करना आरम्भ कर! MSG में रोमियों 14:12 को इस प्रकार लिखा गया है: ''तुझे अपने पूरे हाथ दिए गए हैं कि परमेश्वर के सामने अपने जीवन की देखभाल करें।''

पौलुस ने कहा ''सो आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएं'' (आयत 13)। आमीन और आमीन।

सारांश

हमने चार कारण देखे हैं कि हमें विचार के मामलों में ''एक दूसरे पर दोष नहीं'' लगाना चाहिए:

- क्योंकि हम सब परमेश्वर की महिमा करने का प्रयास कर रहे हैं।
- क्योंकि हम सब प्रभु के हैं।
- क्योंकि हम सब मसीह में भाई और बहनें हैं।
- क्योंकि हम सब का न्याय प्रभु द्वारा होगा।

इनमें से *कोई* भी हमें एक दूसरे को स्वीकार करने और दोष लगाने वाले होने से रोकने की प्रेरणा के लिए काफ़ी है। *चारों* हमें लाजवाब कर देते हैं![26]

टिप्पणियां

[1]जैसा कि आयत 3 की अपनी चर्चा में हमने देखा था, *krino* का इस्तेमाल रोमियों 14 में सकारात्मक अर्थ में भी हुआ है। आयत 5 में इसका अनुवाद दो बार ''मानता है'' और आयत 13 में ''ठान लो'' हुआ है। [2]मैं हमेशा ''विचार के मामलों में'' योग्यता जोड़ने के लिए रुकता नहीं हूं, परन्तु अगली सब टिप्पणियों में इसको समझ लेना चाहिए। [3]ह्यूगो मेकोर्ड'स के अनुवाद में ''हर दिन को महत्व देता'' है। [4]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़ अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 207. [5]1 कुरिन्थियों 16:1, 2 में पौलुस ने मान लिया कि कुरिन्थुस के मसीही लोग आराधना के लिए सप्ताह के हर पहले दिन इकट्ठे होते होंगे। उनके ऐसा करने पर, पौलुस ने उन्हें विशेष चंदा इकट्ठा करने के लिए कहा। [6]कई लोगों ने रोमियों 14:5 का इस्तेमाल प्रभु भोज रविवार के अलावा किसी और दिन लेने के बहाने के रूप में किया है। सप्ताह के पहले दिन के अलावा किसी भी और दिन भोज में भाग लेने का कोई बाइबली अधिकार नहीं है। [7]वाइन, 43. [8]संसार के कई भागों में पुलिस और सेना इतनी भ्रष्ट है कि अधिकतर मसीही लोगों का मानना है कि वे अपने विश्वास से समझौता किए बिना इनमें से किसी में सेवा नहीं कर सकते। अपने क्षेत्र की आवश्यकता अनुसार इस पद्य को बदल लें या इसे बिल्कुल छोड़ दें। [9]कई लोगों का मानना है कि 1 कुरिन्थियों 13:7 में ''सब बातों की प्रतीति करता है'' वाक्यांश के संकेतों में से एक है। [10]क्योंकि कुछ यूनानी हस्तलेखों में न मानने वाले का उल्लेख है, इसलिए KJV में जोड़ा गया है, ''और वो जो दिन को नहीं मानता, प्रभु के लिए वह इसे नहीं मानता'' (NKJV भी देखें)।

[11]कइयों का विचार है कि ''नहीं खाता'' का अर्थ उपवास रखना (भोजन के बिना रहना) है। परन्तु संदर्भ संकेत देता है कि ''नहीं खाता'' का अर्थ मांस खाने से परहेज रखना। [12]जहां आप रहते हैं, वहां के लोगों की खाने की आदतों के अनुसार इस वाक्य को बदल लें। मांस की सामान्य डिश बनाम शाकाहारी सामान्य डिश की बात बताएं। [13]कई अन्य सिखाने वालों तथा प्रचारकों के साथ ''मैंने इस तरह की आयतों का इस्तेमाल किया है।'' रोमियों 14:7 में JB में लिखा है, ''... दूसरों पर इसका प्रभाव है।'' [14]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 481. [15]KJV द्वारा इस्तेमाल किए गए यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 7 के अन्त में एक विराम है। अधिकतर आधुनिक इस्तेमाल किए जाने वाले यूनानी धर्मशास्त्र में 7 और 8 आयतों को जोड़ते हुए इस आयत के अन्त में एक सेमीकॉलन रखा गया है। [16]KJV में ''for'' की जगह ''to'' है। यह उपसर्ग सम्प्रदान बोधक में शब्दों की शृंखला के साथ जाने के लिए अनुवादकों द्वारा जोड़े गए। ''To'' से ''for'' शब्द संदर्भ से बेहतर मेल खाता लगता है। [17]पौलुस ने 13 और 15 आयतों में इस विचार को विस्तार दिया। [18]मैंने इस पद्य में थोड़ी हंसाने वाली बात जोड़ी है। कई परिवार और समाज इस बात में अलग होते हैं कि वे क्या सहन करेंगे और क्या नहीं करेंगे, अपने सुनने वालों के अनुभव दर्शाने के लिए आप आवश्यकता अनुसार इस पद्य को बदल लें। [19]चार्ल्स आर. स्विन्डल, *दि ग्रेस अवेकिंग* (अनाहिम, कैलिफोर्निया, इनसाइट.फॉर लिविंग, 1990), 158. [20]रोमियों 14:10 में KJV में ''परमेश्वर'' की जगह ''मसीह'' है। ''परमेश्वर के न्याय सिंहासन'' और ''मसीह के न्याय सिंहासन'' में कोई अन्तर नहीं है। एक और जगह पर पौलुस ने ''*मसीह* के न्याय आसन'' की बात की है (2 कुरिन्थियों 5:10)। रोमियों 2:16 में पौलुस ने उस दिन की बात की है ''जिस दिन परमेश्वर ... यीशु मसीह के *द्वारा* मनुष्यों ... का न्याय करेगा।''

[21]आयत 4 में ''स्थिर'' का अर्थ है ''गिरेगा नहीं'' (यानी परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर लिया जाएगा), और इसका

अर्थ यहां वही हो सकता है। परन्तु आयत 10 के आगे के संदर्भ के प्रकाश में, यह अधिक लगता है कि इसका अर्थ न्यायाधीश के सामने होना है, जो दण्ड देता है।[22]वाइन, 337–38. [23]इस उद्धरण के आरम्भिक शब्द यशायाह 49:18 से लिए हो सकते हैं।[24]लैरी डियसन, *''दि राइटसनेस ऑफ़ गॉड'': एन इन-डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (क्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कम्युनिकेशंस, 1989), 308. [25]आयत 12 में और संकेत हो सकते हैं: (1) हमें दूसरों को नहीं, बल्कि केवल परमेश्वर को लेखा देना होगा; (2) यदि हम दोष लगाने के दोषी हैं, तो हमें उसका लेखा देना पड़ेगा (देखें मत्ती 7:1, 2)।[26]रोमियों 14 के शेष भाग के अपने अध्ययन में हमें और भी कारण मिलेंगे।